भूमिका

हिंदी भाषा-भाषियों को ध्यान में रखते हुए, हिंदी माध्यम से अन्य भारतीय भाषाओं का अध्ययन और अध्यापन के लिए तैयार की गई पाठ्य सामग्रियों की शृंखला है *'भारतीय भाषा ज्योति'*। इस शृंखला की पुस्तकों की रचना भारत सरकार के भारतीय भाषा संस्थान (मैसूर) तथा उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा विभाग के सहयोग से संचालित कार्यशालाओं में हुई थी। *'भारतीय भाषा ज्योति : ओड़िआ'* पुस्तक इस शृंखला की एक कड़ी है।

इन पाठ्य सामग्रियों में प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् छात्रों से निम्नलिखित भाषिक कुशलताओं की अपेक्षा की जाती है :

1. ओड़िआ भाषी द्वारा भाषा प्रयोग की विभिन्न स्थितियों में किए जानेवाले दिन-प्रतिदिन के वार्तालापों को सुन कर समझना,
2. रेडियो व टी.वी. पर प्रसारित होनेवाले समाचारों, विज्ञापनों, उद्घोषणाओं और अन्य कार्यक्रमों का सार ग्रहण करना,
3. कक्षा में सहपाठियों के साथ अपनी दिनचर्या के विषय में सरल वाक्यों में बातचीत करना एवं ओड़िआ भाषियों से इन विषयों पर औपचारिक तथा अनौपचारिक संदर्भों में चर्चा करना,
4. ओड़िआ भाषा में पुस्तकों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, सूचनापट्टों, इश्तहारों, व्यक्तिगत तथा अन्य प्रकार के पत्रों आदि से संबंधित छोटे छोटे अनुच्छेदों को पढ़ना और साथ ही शब्दकोश और संदर्भ ग्रंथों का उपयोग कर पाना,
5. विभिन्न विषयों पर छोटे छोटे गद्यांश लिखना, व्यक्तिगत एवं अन्य प्रकार के पत्र लिखना तथा अपनी रुचि के परिचित तथा सरल विषयों पर निर्देशित व स्वतंत्र लेख लिखना,
6. शब्दकोश की सहायता लेते हुए ओड़िआ से हिंदी में और हिंदी से ओड़िआ में किसी भी गद्य सामग्री का अनुवाद करना, तथा
7. ओड़िआ भाषा के साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों अथवा परिवेश की जानकारी प्राप्त करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्य पुस्तक की रचना की गई है। भाषा के चारों कौशलों - श्रवण, भाषण, वाचन तथा लेखन पर यहाँ समान रूप से बल दिया गया है। श्रवण और भाषण कौशलों के विकास के लिए प्रत्येक पाठ में वार्तालाप दिए गए हैं और उस के बाद मौखिक अभ्यास के लिए पर्याप्त सामग्री

हैं। इसी प्रकार वाचन और लेखन कौशलों के विकास के लिए प्रत्येक पाठ में एक वाचन अनुच्छेद है और साथ ही अभ्यास भी। यह पुस्तक कक्षा में अध्यापक की सहायता से भाषा सीखने के लिए तैयार की गई है। इसलिए लिपि सीखने/सिखाने के लिए इस पुस्तक में अलग से कोई प्रावधान नहीं किया गया है। लेकिन भूमिका के बाद लिपि सीखने के लिए उपयोगी संकेत और निर्देश विस्तार पूर्वक दिए गए हैं। इसके अनुसार अध्यापक कक्षा में लिपि सिखा सकेंगें। इन संकेतों की सहायता से उत्साही विद्यार्थी अपने आप ओड़िआ लिपि का अभ्यास कर सकेंगे।

इस पुस्तक के चार भाग हैं - भूमिका, ओड़िआ-लिपि तथा उच्चारण, पाठमाला तथा शब्दसूची। पुस्तक के पाठों में भाषा संरचनाओं पर आधारित वार्तालाप तथा अभ्यास, वाचन-लेखन, अनुवाद अभ्यास तथा सरल व्याकरणिक व सांस्कृतिक बिंदुओं के विषय में पर्याप्त जानकारी दी गई है। 'शब्दसूची' में पाठों में आए ओड़िआ शब्दों को वर्णक्रम में प्रस्तुत कर उनके अर्थ हिंदी में दिए गए हैं।

पाठों का ढाँचा इस प्रकार है --

1. वार्तालाप
2. पाठ में आए नए शब्दों के अर्थ
3. अभ्यास
4. वाचन अनुच्छेद (पढ़िए और समझिए)
5. अनुच्छेद में प्रयुक्त नए शब्दों के अर्थ
6. अनुच्छेद संबन्धी अभ्यास
7. अनुवाद तथा लेखन अभ्यास
8. व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

पाठ में दिए गए वार्तालाप तथा वाचन अनुच्छेद में एक सी ही संरचनाओं का प्रयोग किया गया है। यही संरचनाएँ पाठ के शिक्षण-बिंदु हैं। अनुवाद तथा लेखन अभ्यास भी इन्हीं शिक्षण-बिंदुओं पर आधारित हैं।

पुस्तक के वार्तालापों का चयन भाषा-प्रयोग की उन सामान्य स्थितियों को लेकर किया गया है जिनका सामना हमें अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में करना पड़ता है। उदाहरण के लिए किसी परिचित के घर जाना, किसी उत्सव में सम्मिलित होना, बढ़ती-महंगाई पर चर्चा करना, किराये का मकान खोजना या मकान बनवाने के कष्टों की चर्चा करना, इलाज के लिए डॉक्टर के पास जाना, किसी दर्शनीय स्थल पर घूमने जाना आदि वार्तालाप के विभिन्न विषयों को अलग ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है जिससे विद्यार्थी यह जान सकेंगे कि ओड़िआ भाषा में निवेदन कैसे करते हैं, आदेश कैसे देते हैं, मना कैसे करते हैं, नम्रता कैसे अभिव्यक्त की जाती है, हास-परिहास कैसे किया जाता है, सांत्वना कैसे दी जाती है आदि। पाठ के वार्तालाप और वाचन अनुच्छेद की विषय वस्तु में भी यथासंभव साम्य रखने का प्रयास किया गया है। वाचन अनुच्छेदों के लिए लेखन की विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया गया है। जैसे कोई अनुच्छेद वृत्तांत रूप में है तो कोई विवरणात्मक, कोई संवेदनात्मक, कोई आत्मकथा के रूप में। कहीं निबंध शैली को अपनाया गया है तो कहीं संस्मरण का सहारा लिया गया है। कहीं कहानी जैसा सरस माध्यम लिया गया है तो कहीं पत्र जैसा उपयोगी माध्यम।

पाठमाला में 24 पाठ हैं। इन पाठों में से 20 शिक्षण-पाठ हैं और 4 पुनर्भ्यास पाठ हैं। शिक्षण पाठ 4 इकाइयों में बाँटे गए हैं। प्रत्येक इकाई में 5-5 शिक्षण पाठ हैं जिसमें से एक-एक पुनर्भ्यास पाठ है। इस प्रकार

इस पुस्तक में पाठ 6, 12, 18 और 24 पुनर्भ्यास पाठ हैं। शिक्षणार्थ पाठों को व्याकरणिक संरचनाओं और शब्दों की संख्या व प्रकार के आधार पर स्तरीकृत किया गया है। स्तरीकरण के मूलतत्व इस प्रकार हैं।

1. परिचित से अपरिचित की ओर
2. सरल से कठिन की ओर
3. प्रत्येक से सामान्य की ओर
4. सामान्य से तकनीकी की ओर

भाषाई संरचनाओं पर आधारित वार्तालापों का स्तरीकरण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि पाठ्य-सामग्री की स्वाभाविकता बनी रहे। अतः बाद के पाठों में सिखाए जानेवाले शिक्षण बिंदुओं से संबंध कुछ संरचनाएँ आरंभ के पाठों में आ गई हैं। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उस पाठ विशेष की विषय-वस्तु के संदर्भ में उनका उल्लेख आवश्यक था। ऐसी संरचनाओं को उस पाठ की शब्द सूची के हिस्से के रूप में दर्शाया गया है।

शिक्षण पाठों में आई हुई व्याकरणिक संरचनाएँ

पाठ नं. I

1. 1) अस्तिवाचक क्रियारहित वाक्य

ଇଏ ମୋ ସାଙ୍ଗ ରମେଶ ତିୱାରୀ। — ये मेरे मित्र रमेश तिवारी हैं।

इए मो सांग रमेश तिवारी।

ମୋ ନାଁ ପ୍ରତୀକ। — मेरा नाम प्रतीक है।

मो नाँ प्रतीक।

2) आज्ञार्थक वाक्य

ପ୍ରାର୍ଥନା ତୁ ଯା'। — प्रार्थना, तू जा।

प्रार्थना, तू जा'।

ଲତା, ତୁମେ ଯାଅ। — लता, तुम जाओ।

लता, तुमे जाअ।

ରମେଶ ବାବୁ, ଆପଣ ଯାଆନ୍ତୁ। — रमेश बाबु, आप जाइए।

रमेश बाबु, आपण जाआन्तु।

पाठ नं. 2

1) अस्तिवाचक क्रिया 'ଅଛି' (अछि) 'का / की / के / में है'/ हैं के वाक्य तथा उनके निषेध रूप 'ନାହିଁ' (नाहिं) 'नहीं' के वाक्य

ମୋର ବହି ଅଛି। — मेरी किताब है।

मोर बहि अछि।

ମୋ ପାଖରେ ବହି ଅଛି। — मेरे पास किताब है।

मो पाखरे बहि अछि।

2) ମୋ ପାଖରେ ମଲୟାଳମ ଭାଷାର **मेरे पास मलयाळम भाषा**

ଅନୁବାଦ ନାହିଁ। **का अनुवाद नहीं।**

मो पाखरे मलयाळम भाषार अनुबाद नाहिं।

3) **सामान्य वर्तमान कालिक क्रियाओं के वाक्य तथा उनके निषेध रूप**

ମୁଁ ପଢ଼େ । **मैं पढ़ता हूँ/ पढ़ती हुँ।**

मुँ पढ़े।

ଆମେ ପଢୁ। **हम पढ़ते हैं/हम पढ़ती हैं।**

आमे पढु।

ତୁ ପଢୁ । **तू पढ़ता है/तू पढ़ती है/**

तु पढु।

ତୁମେ ପଢ । **तुम पढ़ते हो/ पढ़ती हो।**

तुमे पढ़ ।

ତୁମେମାନେ/ ତୁମ୍ଭେମାନେ ପଢ଼। **तुम लोग पढ़ते हो/पढ़ती हो।**

तुमेमाने पढ़/ तुम्भेमाने पढ़।

ଆପଣ / ଆପଣମାନେ ପଢ଼ନ୍ତି। **आप/आप लोग पढ़ते हैं/**

आपण/ आपणमाने पढ़ंति। **पढ़ती हैं।**

4) **अपूर्ण वर्तमानकालिक क्रियावाले वाक्य**

ମୁଁ ଦେଖୁଛି / ଦେଖୁଅଛି । **मैं देख रहा हूँ/ देख रही हूँ।**

मुँ देखुछि / देखुअछि।

ସେମାନେ ଦେଖୁଅଛନ୍ତି। **वे देख रहे हैं/ देख रही हैं।**

सेमाने देखुछंति/देखुअछंति ।

5) **इच्छार्थक प्रयोग 'ଦରକାର' (दरकार) 'चाहिए' के वाक्य**

ଆପଣଙ୍କର କେଉଁ ଭାଷାର ଅନୁବାଦ **आपको किस भाषा की**

ବହି ଦରକାର ? **अनुवाद पुस्तक चाहिए?**

आपणंकर केउँ भाषार अनुबाद बहि दरकार?

पाठ नं. 3

1. सामान्य भूतकालिक क्रियावाले वाक्य तथा उनके निषेध रूप

1) କାଲି ରାତିରୁ ଜ୍ୱର ଥିଲା । कल रात (को) बुखार था।
कालि रातिरु ज्वर थिला।
ମିନି ସାଗୁ ଟିକେ ପିଇଲା मिनि ने जरा सा साबुदाना
मिनि सागु टिके पिइला। पिया (लिया)।
ତୁ ତ ମୋ କଥା ଶୁଣିଲୁନି । तुमने तो मेरी बात नहीं सुनी।
तु त मो कथा शुणिलुनि।

2) 'ଅଛି' (अछि) 'में है/का की, के है / हैं' के भूतकालिक रूपों के वाक्य
ମିନିକୁ କାଲି ରାତିରୁ ଜ୍ୱର ଥିଲା । मिनि को कल रात को बुखार
मिनिकु कालि रातिरु ज्वर थिला। था।

3) क्रिया के उद्देश्य का बोध करानेवाले वाक्य
ତୁମେ ମିନିକୁ କ'ଣ ଖାଇବାକୁ ଦେଲ ? तूम ने मिनि को खाने केलिए क्या
तुमे मिनिकु क'ण खाइबाकु देल? दिया?
ସିଝାପାଣି ପିଇବାକୁ କହିଲେ । उबाला हुआ पानी पीने को/केलिए
सिझापाणि पिइबाकु कहिले। बोले।

पाठ नं. 4

1. अस्तिवाचक 'ଅଛି' (अछि), 'ହେବ' (हेब) है/ हैं, का/की/के/ में है/हैं होगा /होगी क्रिया वाले (भविष्यतकाल के) वाक्य तथा उनके निषेध रूप

1) କାଲି ସୂଚନା ଭବନରେ କୁମାର कल सूचनाभवन में कुमार उत्सव
ଉତ୍ସବ ହେବ । होगा।
कालि सूचना भबनरे कुमार
उत्सव हेब।

2) ସେଠି ନାଟକ ହେବନି । वहाँ नाटक नहीं होगा।
सेठि नाटक हेबनि।

3) अन्य क्रियाओं के भविष्यतकाल के वाक्य तथा उनके निषेध रूप
ସେମାନେ କ'ଣ ନାଟକ କରିବେ ? क्या वे लोग नाटक करेंगे/
सेमाने क'ण नाटक करिबे? करेंगी?
ଗୀତ ଅନୁସାରେ ସେମାନେ ନାଚିବେ । गीत के अनुसार वे लोग नाचेंगे/
गीत अनुसारे सेमाने नाचिबे। नाचेंगी।
ସେ ଯିବନି । वह नहीं जाएगा/ जाएगी।

से जिबनि।

पाठ नं. 5

1. अनिवार्यता का बोध करानेवाले वाक्य तथा उनके निषेध रूप

ହୋଟେଲରେ ଆଗରୁ ରିଜର୍ଭେସନ୍ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ। — होटेल में पहले से आरक्षण करना पडेगा।

होटेलरे आगरु रिजर्भेसन् करिबाकु पड़िब।

ଏତେ ଆଗରୁ ରିଜର୍ଭେସନ୍ କରିବାକୁ ପଡ଼େନା। — इतने पहले रिजर्भेसन नहीं करना पड़ेगा।

एते आगरु रिजर्भेसन् करिबाकु पड़ेना।

2. इच्छार्थक क्रियावाले वाक्य तथा उनके निषेध रूप।

ତୁମକୁ ମୋ ସାଙ୍ଗରେ ଏଥର ଓଡ଼ିଶା ଯିବା ଦରକାର। — तुमको इस बार मेरे साथ ओड़िशा जाना चाहिए।

तुमकु मो सांगरे एथर ओड़िशा जिबा दरकार।

ହୋଟେଲରେ ରହିବା ମଧ୍ୟ ଆମର ଦରକାର ନାହିଁ। — होटेल में हमारे रहने की जरूरत भी नहीं।

होटेलरे रहिबा मध्य आमर दरकार नाहिं।

पाठ नं. 6

1 से 5 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं का पुनरावलोकन।

पाठ नं. 7

1. अपूर्ण भूतकालिक क्रियावाले वाक्य तथा उनके निषेघ रूप

ହେଲେ ସେଠି ବଖୁରିଆ ଘର ହିଁ ମିଳୁଥିଲା। — लेकिन वहाँ एक कमरे वाला घर ही मिल रहा था।

हेले सेठी बखुरिआ घर हिँ मिळुथिला।

ନାଇଁ ମୁଁ ବୁଲିବାକୁ ଯାଉନଥିଲି। — नहीं, मैं घूमने के लिए नहीं जा रहा था/रही थी।

नाइँ, मुँ बुलिबाकु जाउनथिलि।

पाठ नं. 8

1. अपूर्ण भविष्यतकालिक क्रियावाले वाक्य

ପିଲାମାନେ ବର୍ତ୍ତମାନ ସ୍କୁଲରୁ ଆସୁଥିବେ। — बच्चे अभी स्कूल से आ रहे होंगे/ आ रही होंगी।

पिलामाने बर्तमान स्कुलरू आसुथिबे।

ତୁମେ ରେଡ଼ିଓରେ ଜଣାଣ ଶୁଣୁଥିବ । तुम रेडिओ से जणाण सुन रहे

तुमे रेड़िओरे जणाण शुणुथिब। होगे/ रही होगी।

पाठ नं. 9

1. पूर्ण वर्तमानकालिक क्रियावाले वाक्य और उनके निषेध रूप

ତୁମେ ସେଠି କ'ଣ କ'ଣ ଦେଖିଛୁ ? तुमने वहाँ क्या-क्या देखा है?

तुमे सेठि क'ण क'ण देखिछ ?

ମୁଁ ନାଟ୍ୟମଂଚ ଦେଖିନାହିଁ । मैंने नाट्यमंच नहीं देखा है।

मुँ नाट्यमंच देखिनांहि।

पाठ नं. 10

1. पूर्ण भूतकालिक क्रियावाले वाक्य तथा उनके निषेध रूप

ମୁଁ ସରସ୍ୱତୀ ପୂଜାରେ ସମସ୍ତଙ୍କ ପାଇଁ ଲୁଗା କରିଥିଲି । मैंने सरस्वती पूजा में सबके लिए कपड़े लाए थे।

मुँ सरस्वती पूजारे समस्तंक पाइँ लुगा करिथिलि।

ମୁଁ ତ ଆଗରୁ କିଛି ରଖି ନଥିଲି । मैंने तो पहले कुछ नहीं रखा था।

मुँ त आगरु किछि रखि नथिलि।

पाठ नं. 11

1) पूर्ण भविष्यत कालिक क्रियावाले वाक्य तथा उनके निषेध रूप

ଆହା! କେତେ ରକ୍ତ ବହିଥିବ । आहा! कितना खून बहा होगा।

आहा! केते रक्त बहिथिब।

ତୁ ତ ରାଜମହଲ ଛକର ଦୁର୍ଘଟଣା କଥା ଶୁଣି ନଥିବୁ । तू ने तो राजमहल चौक की दुर्घटना के बारे में सुना नहीं होगा।

तु त राजमहल छकर दुर्घटणा कथा शुणि नथिबु।

2) सहसंबंध सूचक अव्यय शब्दोंवाले वाक्य

ଯେତେ ଥଣ୍ଡା ହେବ ମୋତେ ସେତେ जितना ठंड़ होगा मुझे उतना ही

ଭଲ ଲାଗିବ । अच्छा लगेगा।

जेते थंडा हेब मोते सेते भल लागिब।

पाठ नं. 12

7 से 11 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं का पुनरावलोकन

पाठ नं. 13

1) शक्यता (सामार्थ्य) बोधक क्रियावाले वाक्य तथा उनके निषेध रूप

ସେ ଅଧିକ ପଢ଼ିବାକୁ ଆମେରିକା आगे पढ़ने के लिए वह आमेरिका

ଯାଇପାରେ । जा सकता है/ सकती है।

से अधिक पढ़िबाकु आमेरिका जाइपारे।

ମୁଁ ଗାଁକୁ ଯାଇପାରୁନି । मैं गाँव (को) नहीं जा सकता/

मुँ गाँकु जाइपारूनि। सकती।

पाठ नं. 14

1. ओड़िआ के संज्ञाओं तथा सर्वनामों के लिंग तथा वचनका पुनर्बलन

1) ପିଲାଟିଏ ଯାଉଛି / ପିଲାଟାଏ ଯାଉଛି । बच्चा जाता है।

पिलाटिए जाउछि/पिलाटाए जाउछि।

2) ମୋ ବଡ଼ ଭଉଣୀର ଗୋଟିଏ ପୁଅ ଅଛି । मेरी बडी बहन का एक बेटा है।

मो बड़ भउणीर गोटिए पुअ अछि।

ଆମର ଗୋଟେ ବଗିଚା ଅଛି । हमारा एक बगीचा है।

आमर गोटे बगिचा अछि।

ଗୋରୁପଲ ଏଣେତେଣେ ବୁଲିବା ମନା । गोवृंद इधर उधर घूमना मना है।

गोरुपल एणेतेणे बुलिबा मना।

ସ୍କୁଲ ପିଲାଏ ଆମ୍ବ ସବୁ ଖାଇଦିଅନ୍ତି । स्कूल के बच्चे आम सब खा

स्कुल पिलाए आंब सबु खाइदिअन्ति। देते हैं।

ଆମ ବଗିଚା ଆମ୍ବଗୁଡ଼ିକ ଭଲ ନୁହେଁ । हमारे बगीचे के आम अच्छे नहीं

आम बगिचा आंबगुड़िक भल नुहें। हैं।

ସେ ଜଣେ ଡାକ୍ତର वे एक डॉक्टर हैं।

से जणे डॉक्तर।

ସେମାନେ ତୁମକୁ ଭଲ ପାଉଥିବେ ନା ? वे (लोग) तुमको प्यार करते होंगे

सेमाने तुमकु भल पाउथिबे ना? न?

ସେଗୁଡ଼ିକ ଖୁବ୍ ମିଠା ଫଳ । वे फल बहुत मीठे हैं।

सेगुड़िक खुब मिठा फळ।

ମୋ ବାପା ଜଣେ ଓକିଲ। **मेरे पिताजी (एक) वकील हैं।**

मो बापा जणे ओकिल।

ପୁଲିଂଗ
पुल्लिंग

ତୁମ ଅଜାଘର କେଉଁଠି ? **तुम्हारे नानाजी का घर किधर है।**

तुम अजाघर केउँठि?

ସ୍ତ୍ରୀଲିଂଗ
स्त्रीलिंग

ମୋ ମାଇଁ ଜଣେ ଡାକ୍ତରାଣୀ। **मेरी मामी (एक) डॉक्टरानी हैं।**

मो माइँ जणे डाक्तराणी।

ମୋ ବୋଉର ଆମେ ଦି'ଟା ଝିଅ। **मेरी माताजी के हम दो लड़कियाँ हैं।**

मो बोउर आमे दि'टा झिअ।

ଉଭୟଲିଂଗ
उमयलिंग

ପିଲାମାନଙ୍କୁ ସ୍ନେହ କର। **बच्चों से प्यार करो।**

पिलामानकुं स्नेह कर।

କୁକୁର ଛୁଆଟି କୁଁ କୁଁ କରୁଛି। **कुत्ता पिल्ला कुँ कुँ करता है।**

कुकुर छुआटि कुँ कुँ करूछि।

କ୍ଲୀବଲିଂଗ
क्लीवलिंग

ତୁମ ଘର କେଉଁଠି ? **तुम्हारा घर कहाँ है?**

तुम घर केउँठि?

ଆମର ଗୋଟିଏ ବଗିଚା ଅଛି। **हमारा एक बगीचा है।**

आमर गोटिए बगिचा अछि।

पाठ नं. 15

1. पूर्वकालिक कृदंत वाले वाक्य तथा उनके निषेध रूप

1) ହଁରେ ମାଁ, ମୁଁ ଭାଷଣ ଦେଇକରି ହିଁ ଆସିଲି । — हाँ बेटी, मैं भाषण देकर ही आया हूँ।

हँरे माँ, मुँ भाषण देइकरि हिं आसिलि।

କେବଳ ବୋଉ ବିନା ଖାଇବାରେ ଶୋଇପଡ଼ିଲା । — केवल माताजी बिना खाए सो गई।

केबळ बोउ बिना खाइबारे शोइपड़िला।

ଆଜି ମୁଁ ନ ପଢ଼ିକରି ଯାଇଥିଲି । — आज मैं पढ कर नहीं गया था।

आजि मुँ न पढ़िकरि जाइथिलि।

2) **पूर्वकालिक कृदंत की पुनरुक्तिवाले वाक्य**

ସେ କବିତା ଲେଖିଲେଖି କରି ଅମର ହୋଇଥିଲେ । — वे कविता लिख लिखकर अमर हो गई थीं।

से कबिता लेखिलेखि करि अमर होइथिले।

ଏବେ ତ ତୁ ନିଜ ପାଠ ପଢ଼ିପଢ଼ିକି ହାଲିଆ ହୋଇଯାଉଛୁ । — अब तो तू अपना पाठ पढ़ पढ़ कर थक जाती है/जाता है।

एबे त तु निज पाठ पढ़िपढ़िकि हालिआ होइजाउछु।

पाठ नं. 16

1. **वर्तमानकालिक कृदंत की पुनरुक्ति वाले वाक्य**

ଦିନସାରା କାମ କରୁ କରୁ ମୁଁ ଥକି ଯାଉଛି । — दिनभर काम करते करते मैं थक जाती हूँ।

दिनसारा काम करू करू मुँ थकि जाउछि।

ସେମାନେ ତ ଆଜି ଆସୁ ଆସୁ ଡ଼େରି କଲେ । — आज तो उन्होंने आते-आते देर की।

सेमाने त आजि आसु आसु डेरि कले।

2. वर्तमानकालिक कृदंत क्रिया विशेषणवाले वाक्य

ମୁଁ ଆଜି ତୁମର ପିଲାପିଲିଙ୍କୁ ସ୍କୁଲକୁ ଯାଉଥିବାର ଦେଖିଛି। — आज मैंने तुम्हारे बच्चों को पाठशाला जाते हुए देखा।

मुँ आजि तुमर पिलापिलिंकु स्कुलकु जाउथिबार देखिछि।

ଭାଇଂକି ଅଫିସ୍‌ରୁ ଆସୁଥିବାର ମୁଁ ଦେଖିଛି। — मैं ने भैयाको ऑफिस से आते हुए देखा।

भाइंकि अफिस्‌रु आसुथिबार मुँ देखिछि।

पाठ नं. 17

1. क्रिया से व्युत्पन्न संज्ञाओं के वाक्य

1) କାଲି ଆମର ଇଂରାଜୀ ପଢ଼ା ଆରମ୍ଭ ହେବ। — कल हमारी अंग्रेजी की पढ़ाई आरंभ होगी।

कालि आमर इंराजी पढ़ा आरम्भ हेब।

2) କାଲି ସେଠାରେ ଗାଉଣା ବାଜଣା ହେବ। — कल वहाँ गाना बजाना होगा।

कालि सेठारे गाउणा बाजणा हेब।

2. कृदंतवाची शब्दों से व्युत्पन्न संज्ञा शब्द

1) ରାତିରେ କିଣିବାବାଲାଂକର ଭିଡ଼ ହେବ। — रात में खरीदनेवालों का भीड़ होगा।

रातिरे किणिबाबालांकर भिड़ हेब।

2) ମୁଁ ଖାଇବାବାଲା ନୁହେଁ ତ ଆଉ କିଏ ? — मैं खानेवाला नहीं हूँ तो और कौन?

मुँ खाइबाबाला नुहें त आउ किए?

3) ଅନେକ ଜାଗାରୁ ଦେଖଣାହାରୀ ଆସିଛନ୍ତି। — अनेक जगहों से (देशों से) देखनेवाले आएँगे।

अनेक जागारु देखणाहारी आसिछन्ति।

4) ତା' ପୋଷଣହାରୀ ପୁଅ ମରିଗଲା। — उस का पोषण करनेवाला बेटा मर गया।

ता' पोषणाहारी पुअ मरिगला।

3. क्रिया से व्युत्पन्न विशेषण शब्दों के वाक्य

1) ସେଠାରେ ଜଳନ୍ତା ନିଆଁରେ ଲୋକ ଚାଲିବେ। वहाँ जल्ती हुई आग में लोग
सेठारे जळन्ता निआँरे लोक चालिबे। चलेंगे।

2) ଚଳନ୍ତା ଗାଡ଼ିରେ ଚଢ଼ ନାହିଁ। चलती हुई गाडी पर मत चढिए।
चळन्ता गाड़िरे चढ़ नाहिं।

3) ପାହାଡ଼ ଉପରକୁ ଜିବାପାଇଁ ଗୋଟିଏ ଉଠାଣି पहाड़ के ऊपर जाने केलिए एक
ରାସ୍ତା ଯାଇଛି। आरोही रास्ता है।
पाहाड़ उपरकु जिबापाईं गोटिए उठाणि
रास्ता जाइछि।

4) ଆମର ଘର ଲେଉଟାଣି ବେଳ ହେଲାଣି। हमारा घर लौटने का समय
आमर घर लेउटाणि बेळ हेलाणि। हो गया है।

पाठ नं. 18

13 से 17 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं का पुनरावलोकन

पाठ नं. 19

1. हेतुमद्क्रियावाले शर्तवाचक वाक्य तथा उनके निषेध रूप

ଆପଣ ବାହୁଡ଼ା ଦିନ ଯଦି ପୁରୀ ଯିବେ ତେବେ ମୁଁ ଯିବି। आप 'बाहुड़ा' के दिन यदि पुरी जाएँगे, तो मैं भी जाऊँगा/ जाऊँगी।
आपण बाहुड़ा दिन जदि पुरी जिबे तेबे मुँ जिबि।

ଆପଣ ଆମକୁ 'ରଥଯାତ୍ରା' ବିଷୟରେ ଯଦି କିଛି କହନ୍ତେ ତେବେ ଭାରି ଭଲ ହୁଅନ୍ତା। यदि आप हमको 'रथयात्रा' के संबध में कुछ कहते, तो बहुत अच्छा होता।
आपण आमकु 'रथजात्रा' बिषयरे जदि किछि कहंते तेबे भारि भल हुअंता।

ଆପଣମାନେ ନଗଲେ ଆମେ ମଧ୍ୟ ଯିବୁନି। आप नहीं गए तो हम भी नहीं जाएँगे।
आपणमाने नगले आमे मध्य जिबुनि।

2. हेतु-हेतुमद भूतकालिक क्रियावाले वाक्य

ଆମକୁ କହିଥିଲେ ତ ଆମେ ବି ଯାଇଥାନ୍ତୁ। हम को कहा होता, तो हम भी गए होते।

आमकु कहिथिले त आमे बि जाइथांतु।

पाठ नं. 20

1. सहसंबधसूचक अव्यय शब्दों वाले वाक्य तथा उनके निषेध रूप

ଆମେ ଯେତେବେଳେ ପଢୁଥିଲୁ, ସେତେବେଳେ ଏଠାରେ ଗୋଟିଏ ରେଭେନ୍‌ସା କଲେଜ୍ ଥିଲା ।

हम जब पढ़ते थे, तब यहाँ रेभेन्सा कॉलेज एक ही था।

आमे जेतेबेळे पढुथिलु, सेतेबेळे एठारे गोटिए रेभेन्सा कलेज् थिला।

ଆଜି ଯେତେ ଝିଅ ପଢୁଛନ୍ତି ସେତେବେଳେ ସେତେ ଝିଅ ପଢୁନଥିଲେ।

अब जितनी लड़कियाँ पढ़ रही हैं, तब उतनी लड़कियाँ नहीं पढ़ती

आजि जेते झिअ पढुछंति सेतेबेळे सेते झिअ पढुनथिले।

ଆଜି ଯେଉଁଠି ତୁମ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ସେଇଠି ଗୋଟିଏ ଜଂଗଲ ଥିଲା।

आज जहाँ तुम्हारा विश्वविद्यालय है, वहाँ एक जंगल था।

आजि जेउँठि तुम बिश्वबिद्याळय सेइठि गोटिए जंगल थिला।

ଆପଣ ଯେବେ ଚାକିରୀ କରିଥିଲେ, ସେବେ ଦରମା କେତେ ଥିଲା ?

जब आप नौकरी करते थे, तब वेतन कितना था?

आपण जेबे चाकिरी करिथिले, सेबे दरमा केते थिला?

ସେତେବେଳେ ଯେଉଁମାନେ ପାଠ ପଢ଼ାଉଥିଲେ ସେମାନେ ଶିକ୍ଷାଦାନକୁ ପବିତ୍ର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ବୋଲି ଭାବୁଥିଲେ।

तब जो पाठ पढाते थे वे लोग शिक्षादान को पवित्र कर्तव्य मानते थे।

सेतेबेळे जेउँमाने पाठ पढ़ाउथिले सेमाने शिक्षादानकु पबित्र कर्त्तब्य बोलि भाबुथिले।

पाठ नं. 21

1. प्रेरणार्थक क्रियावाले वाक्य तथा उनके निषेध रूप

1) ଆମକୁ ଏଠି ବସେଇଦେଇ ମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପି.ଏ କୁଆଡ଼େ ଗଲେ ?

हमको यहाँ बिठाकर मंत्री जी के पी.ए. कहाँ गए?

आमकु एठि बसेइदेइ मंत्रींक पि.ए कुआड़े गले?

ଗୋଟିଏ ଷ୍ଟାଡ଼ିୟମ୍ ସରକାରଙ୍କ ଦ୍ୱାରା କରେଇବା ଆମର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ।
गोटिए ष्टाड़ियम् सरकारंक द्वारा करेइबा आमर उद्देश्य।

सरकार की तरफ से एक स्टेडियम बनवाना हमारा उद्देश्य है।

पाठ नं. 22

1. **मिश्रक्रिया वाले वाक्य तथा उनके निषेध रूप**

1) ବାହାଘର ଦିନ କନ୍ୟାକୁ ସଜ କରିବା ଦାୟିତ୍ୱ ତାଙ୍କର ।
बाहाघर दिन कन्याकु सज करिबा दायित्व तांकर।

शादी के दिन कन्या के शृंगार करने का दायित्व भी उनका।

ଏଇ ସବୁ କାମ କରିବାକୁ ତାଙ୍କୁ ବହୁତ ଭଲ ଲାଗିବ ।
एइ सबु काम करिबाकु तांकु बहुत भल लागिब।

ये सब काम करना उनको बहुत अच्छा ही लगेगा।

ଏହାଦ୍ୱାରା ମୋତେ ବହୁତ ଖରାପ ଲାଗୁଛି ।
एहाद्वारा मोते बहुत खराप लागुछि।

इस से मुझे बहुत बुरा लगता है।

କ'ଣ ଆପଣ ମୋତେ ସାହାଯ୍ୟ କରିବେନି ?
क'ण आपण मोते साहाज्य करिबेनि?

क्या आप मेरी मदद न करेंगे।

ଆପଣ ଚିନ୍ତା କରନ୍ତୁନି ।
आपण चिंता करतुंनि।

आप चिंता मत कीजिए।

2) **संयुक्त क्रियावाले वाक्य तथा उनके निषेध रूप**

ସେ କାମ ସେ କରିନେବ ।
से काम से करिनेब।

वह काम वे कर लेंगे।

ଆଗରୁ ମୁଁ ତା ହାତରେ କିଛି ଟଂକା ଦେଇଦେବି ।
आगरु मुँ ता हातरे किछि टंका देइदेबि।

मैं पहले ही उसके हाथ कुछ रुपये देदूँगा।

ମୁଁ କିଛି କରି ନାହିଁ। मैं ने कुछ नहीं कर लिया है।
मुँ किछि करि नांहि।

3) संयुक्त वाक्य

ବାହାଘର ତ କେବଳ ଗୋଟିଏ ମାସ ରହିଲା। ଆଉ ମୋତେ କିଛି କାମ ଦେଲେ ନାହିଁ।

शादी के तो केवल एक ही महीना रह गया है और मुझे कुछ काम नहीं दिया है।

बाहाघर त केबळ गोटिए मास रहिला। आउ मोते किछि काम देले नांहि।

ପିଲାମାନେ କ'ଣ କେବଳ ମାଛରେ ହିଁ ରାଜିହେବେ କିମ୍ବା କୁକୁଡ଼ା କିଣିବାକୁ ପଡ଼ିବ ?

क्या बच्चे केवल मछली से ही राज़ी होंगे या हम को मुर्गे खरीदना ही पड़ेगा?

पिलामाने क'ण केबळ माछरे राजिहेबे किंबा कुकुड़ा किणिबाकु हिं पड़िब?

पाठ नं. 23

1. कर्मवाच्यवाले वाक्य तथा उनके निषेध रूप

ସେମାନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ସାଂସ୍କୃତିକ ଉତ୍ସବ କରାଯିବ।

उन लोगों के द्वारा सांस्कृतिक उत्सव कराया जाएगा।

सेमानंक द्वारा सांस्कृतिक उत्सब कराजिब।

ତାଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ପିଲାମାନଂକୁ ପୁରସ୍କାର ଦିଆଯିବ।

उनके द्वारा बच्चों को पुरस्कार दिलाया जाएगा।

तांक द्वारा पिलामानंकु पुरस्कार दिआजिब।

पाठ नं. 24

19 से 23 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं का पुनरावलोकन

पहले ही कहा जा चुका है कि हर पाठ के वार्तालाप के बाद उस वार्तालाप में आए नये शब्दों को दिया गया है। ऐसे बहुत से शब्द हैं जो ओड़िआ भाषा में संस्कृत तथा अन्य भाषाओं से आए हैं। इनमें

से बहुत से शब्दों का प्रयोग हिंदी में भी होता है। इस संदर्भ में उन शब्दों पर भी विशेष ध्यान दिया गया है जो रूप की दृष्टि से तो दोनों भाषाओं में समान हैं पर उनके अर्थ ओड़िआ और हिंदी में बहुत भिन्न हैं। शब्दों के वे अर्थ पहले दिए गए हैं जो उस पाठ के संदर्भ के उपयुक्त हैं। इसके पश्चात् यदि आवश्यक हुआ तो वे अर्थ भी दिए गए हैं जो सर्वाधिक प्रचलित हैं।

पाठों के अभ्यास, उन में सिखाए गए पाठ्य-बिंदुओं को ध्यान में रख कर तैयार किए गए हैं। इन अभ्यासों का उपयोग सीखे हुए बिंदुओं को दोहराने तथा परीक्षा के लिए भी किया जाएगा। नियम के अनुसार छात्र की परीक्षा उन्हीं बिंदुओं के विषय में ली जाएगी जो सिखाए जा चुके हैं। लेकिन प्रत्येक पाठ में नए वाक्य अवश्य देखने को मिल जाएँगे। सीखी हुई संरचनाओं और शब्दों की सहायता से विद्यार्थी स्वयं ऐसे वाक्य गढ़ सकता है जिनका प्रयोग सीखे गए पाठों में नहीं आया है। प्रत्येक अभ्यास में परीक्षा के लिए एक समय पर एक ही बिंदु को रखा गया है।

अभ्यास में दिए गए प्रश्न भाषा संरचना और शब्दों से संबंधित हैं। कुछ प्रमुख अभ्यास इस प्रकार हैं- शब्दों का क्रम ठीक करके वाक्य बनाना, वाक्य विस्तार करना, वाक्य रूपों में परिवर्तन करना, एक ही वाक्य को विभिन्न रूपों में कहना, वाक्यांशों को जोड़कर वाक्य बनाना, उचित शब्दों का चयन करना, वाक्य पूरा करना, कर्ता या कर्म के लिंग और वचन के अनुसार क्रिया में उचित प्रत्यय लगाना, प्रश्नों के उत्तर देना आदि। प्रत्येक पाठ में कम से कम पाँच-छह अभ्यासों का समावेश किया गया है।

वाचन अनुच्छेद का उद्देश्य छात्र के बोधन और शब्द भंडार को विकसित करना है। इन अनुच्छेदों के विषय में दो प्रकार के प्रश्न पूछे गए हैं - वस्तुनिष्ठ एवं विस्तारनिष्ठ। इन प्रश्नों से छात्र के बोधन तथा अभिव्यक्ति दोनों की ही परीक्षा हो सकेगी।

प्रथम पाँच पाठों की संपूर्ण पाठ्य-सामग्री ओड़िआ लिपि में और भाषा सिखाने हेतु देवनागरी में भी दी गई हैं। ऐसा इसलिए किया गया है जिससे विद्यार्थी आरंभ में भाषा सीखने पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकें। जब वह भाषा से थोड़ा बहुत परिचित हो जाएगा तो लिपि सीखने में भी उसे सहायता मिलेगी। वैसे अपेक्षा यही की जाती है कि भाषा और लिपि दोनों का शिक्षण साथ-साथ ही आरंभ किया जाए। ओड़िआ लिपि सीखने के लिए २० घंटों की निर्देश सामग्री पर्याप्त है। इसके पश्चात विद्यार्थी बिना किसी कठिनाई के ओड़िआ लिपि में पाठ्य सामग्री को पढ़ सकेगा। पहले पाँच पाठों में भाषा का भी कुछ ज्ञान विद्यार्थी को हो जाएगा। छठा पाठ पुनर्भ्यास के लिए है। इसमें पहली पाठ्य इकाई के शिक्षण बिंदुओं पर विद्यार्थी के अभी तक सीखे गए भाषाई बिंदुओं की परीक्षा हो जाएगी। छठे पाठ से चौबीसवें तक के पाठों को देवनागरी में नहीं दिया गया है क्योंकि अब तक छात्र ओड़िआ लिपि से परिचित हो गए होंगे। व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक टिप्पणियों में अवश्य व्याख्या के लिए सरल और साधारण भाषा का प्रयोग किया गया है। प्रयास यही रहा है कि क्लिष्ट तकनीकी शब्दावली का कम से कम प्रयोग किया जाए। छात्र को चाहिए कि वह व्याकरणिक संरचनाओं का अच्छी तरह अभ्यास कर उन्हें पूरी तरह हृदयंगम कर ले। इससे व्याकरण के नियमों को समझना सरल हो जाएगा।

पुस्तक का अंतिम खंड है -- शब्दसूची। पाठों में प्रयुक्त शब्दों की सूची वर्णमाला के क्रम में दी गई है। ध्यान देने की बात यह है कि इसमें शब्दों के मूल रूप अर्थात् कोशीय रूप को ही स्थान दिया गया है। संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों का मूल रूप ही दिया गया है, न कि उनके रूपांतरित रूप - जैसे-

'ଘରର' (घरर) 'घर का' 'ଘରେ', (घरे) 'घर में', 'ଘରୁ' (घरु) 'घर से' आदि रूप न देकर केवल 'ଘର' (घर) 'घर' शब्द को ही सूची में दिया गया है। इसी तरह क्रियाओं के भी कोशीय रूप को ही सूची में स्थान दिया गया है, काल और वृत्ति के अनुसार क्रिया के विभिन्न रूपों को नहीं। जैसे-यहाँ केवल 'କରିବା' (करिबा) 'करना' रूप को ही रखा गया है। इससे बने 'କରୁଛି', 'କରିଲି', 'କରୁନ' (करुछि, करिलि, करुन) 'कर रहा है, किया है, कीजिए' आदि रूपों को नहीं दिया है।

शब्दसूची में ओड़िआ शब्दों के दाहिनी तरफ उन शब्दों के हिंदी अर्थ दिए गए हैं। दोनों के बीच में उन पाठों की क्रम संख्याएँ भी दी गई हैं, जिनमें वे शब्द प्रयुक्त हुए हैं। क्योंकि प्रत्येक पाठ में दो दो शब्द-सूचियाँ हैं ; अतः पाठ के वार्तालाप में आए हुए शब्दों को पाठ संख्या के बाद 'क' और वाचन अनुच्छेद के शब्दों को 'ख' रूप में दिखाया गया है। उदाहरण के लिए ଅପା (अपा) 'दीदी' शब्द के सामने 1 (क) लिखा हुआ है। इसका अर्थ है यह शब्द प्रथम पाठ के वार्तालाप में प्रयुक्त हुआ है। ଏଇଟି (एइटि) 'यह' शब्द की दाहिनी तरफ 1 (ख) दिया गया है। इसका अर्थ है यह शब्द प्रथम पाठ के वाचन अनुच्छेद में है। इन के अलावा प्रत्येक शब्द की व्याकरणिक कोटी भी दिखाई गई है। शब्दसूची के बाद ओड़िआ गिनती 'एक' से 'सौ' तक संख्याओं में तथा शब्दों में दी गई है।

इस पुस्तक को कक्षा में पढ़ानेवाले अध्यापकों से दो तीन बातें कहना ज़रूरी है। किसी भी भाषा को पढ़ाने के लिए कोई भी एक तरीका ऐसा नहीं है जो पूरी तरह समर्थ हो या अपने आप में पूर्ण हो। विशेष रूप से द्वितीय भाषा पढाने के संदर्भ में यह बात शत-प्रतिशत सत्य है। द्वितीय भाषा सीखने के लिए विद्यार्थी को कक्षा के भीतर और बाहर एक-जैसा ही प्रयास करना होगा। विद्यार्थी सीखी गई संरचनाओं और शब्दों को जितना अधिक दोहराएगा, उनका जितना अधिक प्रयोग करेगा, उतना ही उसके उच्चारण और बोधन में सुधार होगा। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे सिखाई गई संरचनाओं तथा ओड़िआ शब्दों के अभ्यास के लिए कक्षा में उचित वातावरण तैयार करें। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा को उसके परिवेश में रखकर ही सीखना और सिखाना चाहिए। इससे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया सरल भी होगी और स्वाभाविक भी।

सिखाई गई संरचनाओं और शब्दों का पर्याप्त अभ्यास करवा लेने के बाद शिक्षक को चाहिए कि वह पूरे पाठ को ऊँचे स्वर में पढ़ें। शिक्षक का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए। अभिव्यक्ति के अनुसार उसके स्वर में उचित उतार-चढाव भी होना चाहिए। पाठ का पहला वाचन धीमी गति से किया जाएँ जिससे विद्यार्थी प्रत्येक ध्वनि, शब्द और वाक्य को स्पष्ट रूप से सुन सकें। इसके पश्चात् पाठ को भाषा की स्वाभाविक गति के अनुसार पढ़ना चाहिए। फिर अपने साथ विद्यार्थियों को भी सामूहिक रूप में पाठ को दोहराने के लिए कहना चाहिए। तत्पश्चात् बोधन संबंधी प्रश्न पूछे जाएँ। यदि विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर देने में कठिनाई हो तो शिक्षक उनकी मदद करें। इतने अभ्यास के बाद विद्यार्थी स्वतः उस पाठ का वाचन कर पाएगा और समझ सकेगा। यदि छात्र के उच्चारण में कोई त्रुटि हो तो शिक्षक उस त्रुटि को दोहराए बिना सही रूप का परिचय दें। इस अभ्यास के पश्चात् भी विद्यार्थियों के मन में यदि कोई संदेह या प्रश्न रह जाए तो शिक्षक उसका निवारण करें। हमारे विद्यार्थी वयस्क भी हो सकते हैं, अतः बार बार दोहराने में उन्हें हिचक भी हो सकती है और उनके लिए यह अभ्यास अरुचिकर भी हो सकता है। ऐसी अवस्था में शिक्षक अपनी सुविधानुसार व्यक्तिगत रूप से उनकी सहायता करें। सांस्कृतिक और

व्याकरणिक टिप्पणियों को कक्षा में न पढ़वा कर, घर में पढ़ने के लिए कहें। उस के बाद विद्यार्थियों के संशयों का निवारण कक्षा में कर सकते हैं।

छात्रों से वाचन अनुच्छेदों को मौन रूप से पढ़ने के लिए भी कहें। अनुच्छेद के विषय में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वतः देने का प्रयास करें। आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक की मदद लें। शिक्षक छात्र को इतना समय अवश्य दें कि वह पूरे अनुच्छेद को मौन रूप से 2-3 बार पढ़ सकें। इसके पश्चात् यदि समय रहे तो प्रत्येक छात्र से बारी बारी से उस अनुच्छेद को ऊँचे स्वर में पढ़ने के लिए कहें। ध्यान रहे कि कक्षा समाप्त होने से पहले अंतिम वाचन शिक्षक द्वारा ही किया जाएँ जिससे छात्र के कानों में सही उच्चारण दर्ज होता रहे।

अनुवाद और लेखन का अभ्यास छात्र को गृहकार्य के रूप में दिया जाए। शिक्षक इसकी सावधानी पूर्वक जाँच करें और छात्र के संदेह और समस्याओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा कर उनका निदान करें।

कुछ पाठों में ओड़िआ भाषा के प्रचलित मुहावरों व कहावतों का प्रयोग हुआ है। यदि हिंदी में भी उसी तरह के मुहावरे हों तो शिक्षक उनका सहारा लेते हुए अर्थ स्पष्ट करें। यदि हिंदी में ऐसे मुहावरे न हों तो शिक्षक विभिन्न वाक्यों में उनका प्रयोग करके उन के अर्थ स्पष्ट करें।

प्रत्येक पाठ के वार्तालाप में सभी वाक्यों का हिंदी अनुवाद दिया गया है। अनुवाद करते समय इस बात का ध्यान रखने की कोशिश की है कि हिंदी भाषा की अपनी प्रकृति बनी रहे। पर कहीं कहीं हिंदी में कुछ वाक्य बनावटी या अस्वाभाविक लग सकते हैं। ओड़िआ भाषा की कुछ विशेष संरचनाओं के प्रयोग देने के प्रयत्न में ऐसा हो गया है। अनुवाद केवल इसलिए दिया गया है जिससे छात्र अर्थ समझ सकें। अनुवाद का प्रयोग ओड़िआ भाषा सीखने के लिए न किया जाए। भाषा केवल संरचनाओं व शब्दों के अभ्यास द्वारा ही सीखी जा सकती है। हिंदी अनुच्छेद का ओड़िआ भाषा में अनुवाद करते समय छात्र यही प्रयास करें कि उसका अनुवाद ओड़िआ भाषा की संरचना में हो, हिंदी की संरचना में नहीं। वाचन अनुच्छेदों के हिंदी अनुवाद नहीं दिए गए हैं। ऐसा इसलिए किया गया है जिससे छात्र ओड़िआ भाषा को उसी भाषा के माध्यम से ही समझने का प्रयास करें और स्वयं उसका हिंदी में अनुवाद करने का प्रयास करें।

भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावशाली तथा रोचक बनाने के लिए ओड़िआ भाषा के परिवेश का अनुभव तथा ओड़िआ भाषा भाषियों से संपर्क स्थापित करना महत्वपूर्ण है। ऐसा प्रयास किया जाए कि छात्रों को ओड़िआ भाषा-भाषियों के संपर्क में आने तथा संबंधित भाषा के गीत, कविताएँ, वार्तालाप, भाषण आदि सुनने का अवसर मिल सकें। साथ ही छात्रों को ओड़िशा के महान साहित्यकारों, नेताओं तथा अन्य विभूतियों के चित्र भी दिखाए जाएँ। यदि उपलब्ध हो सकें तो ओड़िआ राज्य के हस्तशिल्प के नमूनों से कक्षा को सजाया जाए। संभव हो तो कक्षा में ओड़िआ राज्य के प्राकृतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के चित्र लगाए जाए तथा वहाँ की विभिन्न ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का ऑडियो-वीडियो माध्यम से भी परिचय कराया जाए।

वार्तालाप, वाचन अनुच्छेद तथा अनुवादों के लिए अनुच्छेदों का लेखन करते हुए भी यह प्रयास किया गया है कि इनके द्वारा ओड़िशा के जीवन, कला, संस्कृति तथा इतिहास का परिचय छात्रों को हो।

इस पाठ्यक्रम के पश्चात् छात्रों से जो भाषिक निपुणताओं की अपेक्षाएँ की गई हैं उनका विवरण पहले ही दिया जा चुका है। वास्तव में शिक्षार्थियोंने इस पुस्तक से कितना सीखा है वह इस पुस्तक की कसौटी भी है और मूल्यांकन भी। यह प्रयास प्रायोगिक है। इसमें शिक्षकों एवं छात्रों की व्यावहारिक समस्याओं के आधार पर सुधार की बहुत सी संभावनाएँ हैं। इस दिशा में सकारात्मक सुझावों का स्वागत है।

मेरी बात अधूरी रह जाएगी यदि मैं भारतीय भाषा संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो.डॉ.ई. अण्णामलै तथा उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा विभाग के पूर्व भाषा-परामर्शी प्रो.डॉ. गोविंद शर्मा रजनीश के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट न करूँ क्योंकि *भारतीय भाषा ज्योति* शृंखला की पुस्तकों का संकल्पन, रूपांकन तथा संपादन करने और कार्यशालाओं के संचालन का चुनौती पूर्ण उत्तरदायित्व इन्हीं महानुभावों द्वारा मुझे सौंपा गया था। *भारतीय भाषा ज्योति* शृंखला की पुस्तकों का निर्माण काफ़ी पहले हो गया था ; पर यह बहुमूल्य सामग्री बरसों तक प्रकाशन की प्रतीक्षा करती रही। संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. (डॉ.) ओंकार नाथ कौल तथा संस्थान के वर्तमान निदेशक प्रो. (डॉ.) उदय नारायण सिंह के प्रयासों से ही इन पुस्तकों को प्रकाश की किरण देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। इन सबके प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ। विशेष रूप से प्रो. सिंह ने हिंदी के माध्यम से तैयार की गई *'भारतीय भाषा ज्योति'* की शृंखला की सभी पुस्तकों के प्रकाशन में बहुत दिलचस्पी ली है। इस शृंखला को उत्तरोत्तर आगे बढ़ाने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है।

पुस्तक निर्माण कार्यशाला में श्रीमती. सुकृति तनय सामंतराय तथा श्री. भजहरि मोहाप्रात्र का अत्यंत रचनात्मक योगदान रहा। इनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। कार्यशाला में हिंदी विशेषज्ञ के रूप में प्रो. (डॉ). मुरारी लाल उप्रेति की पांड़ित्यपूर्ण प्रतिभागिता के लिए भी मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

उक्त कार्यशाला के उपरांत आयोजित पुनरीक्षण-कार्यशाला में संशोधन, परिवर्धन, पुनर्लेखन आदि का कार्य तत्परता से संपन्न कर सामग्री को प्रकाशन योग्य बनाने के लिए हमारे संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो.(डॉ).डी.पी. पट्टनायक, कुमारि. शुभलक्ष्मी दास, कुमारि. झूनि मल्लिक तथा हिंदी विशेषज्ञ प्रो.(डॉ).पी.एन. त्रिशाल, के अमूल्य योगदान के लिए उन के प्रति मैं हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। प्रथम कार्यशाला के बाद पुस्तक की पांडुलिपि पढ़ कर रचनात्मक सुझाव देने के लिए मैं डॉ.खागेश्वर महापात्र का भी आभारी हूँ। उसी प्रकार प्रो.(डॉ).बि.एन. पट्टनायक को भी मैं कृतज्ञता देना चाहती हूँ। उन्होंने ओड़िआ लिपि तथा उच्चारण संबधी नियमों की टिप्पणी जो हम ने तैयार की है उस का अवलोकन किया है।

कुमारि झूनि मल्लिक, श्रीमती अनिता बदरीनाथ और श्रीमती स्वर्णाली चौधरी का मैं विशेष धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने अतीव ध्यान तथा लगन से इस पुस्तक के डी.टी.पी. का काम किया है। हमारे संस्थान के पुस्तकालय के अध्यक्ष डॉ.सी.आर. सुलोचना, तथा उपाध्यक्ष डॉ.बी.ए.शारदा, डॉ.आर. सुमनकुमारी और कॉटलोगर मीर निस्सार हुसैन, कंप्यूटर केंद्र के प्रो.(ड़ॉ). साम् मोहन लाल तथा उन के सहकर्मी, कलाकार श्री. परमानंद बारिख तथा श्री.ह. मनोहर, हमारे मुद्रणालय के प्रबंधक श्री.एस.बी. बिश्वास तथा उनके सहयोगी तथा प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष प्रो.(डॉ). रामसामी तथा उन के सहयोगी श्री.आर. नंदीश इन सब का भी मैं यहाँ कृतज्ञता पूर्वक स्मरण करती हूँ। संस्थान के पाठ्य सामग्री निर्माण

केंद्र के मेरे सहयोगी श्री.एस्.एस. यदुराजन, डॉ.बी. मल्लिकार्जुन, डॉ.आई.एस. बोरकर, श्रीमती. टी.वी. वाणी तथा कुमारी सुधा फाटक की सहकारिता भी अविस्मरणीय है। उसी प्रकार हमारे लेखा विभाग के मुख्य श्री.बी.जी. मंजुनाथ, और उन के सहकर्मी श्री.एन. यतिराजु तथा श्री.एस. राजु भी कार्यशालाओं के संचालन में मेरी बहुत मदद की है और मेरे धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं अपने पति प्रो.के.वी. श्रीनिवासन के प्रति मेरी अपार कृतज्ञता यहाँ प्रकट करती हूँ जिन्होंने महीनों तक चलनेवाली मेरी कार्यशालाओं के संचालन में महत्वपूर्ण शैक्षणिक तथा सामयिक सहकारिता दी है। छुट्टि के दिनों तथा ऑफिस समय के बाहर भी घंटों तक घर की चिंता न कर के 'भारतीय भाषा ज्योति' शृंखला की पुस्तकों के निर्माण में मग्न होना मुझे उन की ही मदद से कार्यसाध्य हुआ है।

उन सभी छात्रों एवं शिक्षकों के प्रति मैं अग्रिम रूप से अपना आभार अभिव्यक्त करना चाहती हूँ जो इस सामग्री का उपयोग करेंगे और इस के विषय में अपने विचार तथा प्रतिक्रियाएँ हम तक पहुँचाएँगे।

मैसूर
15/5/2005

बी. श्यामला कुमारी
प्रो. एवं उपनिदेशक
भारतीय भाषा संस्थान